अस्तित्ववाद

ज्यां पाल सार्त्र

इनको 1964 मे नोबेल पुरस्कार मिला था जिसे लेने मना कर दिया ।

अध्ययन सामग्री निर्माण
डा शकील हुसैन
shakeelvns27@gmail.com
विभागाध्यक्ष
राजनीति विज्ञान
शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महिविद्यालय ।
दुर्ग ,   छत्तीसगढ़ ।
नैक द्वारा A+ मूल्यांकित

अस्तित्ववाद बीसवीं शताब्दी का वह राजनीतिक दर्शन है जो उत्तर औद्योगिक समाज की समस्याओं और विरोधाभासो से पैदा हुआ है । अतः यह उत्तर औद्योगिक समाज के संकटों का दर्शन है । जिसमें दार्शनिकों को यह लगता है हम एक सभ्य समाज की बजाए एक **जनपुंज समाज या मास सोसाइटी** मे रह रहे है जिसमें व्यक्ति के स्वयं अपने लिए कोई स्थान नहीं है । अथवा उसे यह लगता है की समस्त समाज उसे कुचल देना चाहता है । अतः अस्तित्ववाद बीसवीं सदी का वह राजनीतिक दर्शन है जो मनुष्य के अस्तित्व पर अपना ध्यान केंद्रित करता है । इसका विचार है कि मनुष्य की दो प्रकार की पहचान होती है :-

1- व्यक्तिगत या अस्तित्व की पहचान ।
2- सामूहिक पहचान । इस सामूहिक पहचान के कई रूप हो सकते हैं ।

अस्तित्व वादियों के अनुसार व्यक्ति की सामूहिक पहचान से उसकी व्यक्ति व्यक्तिगत पहचान सदैव दबी हुई रहती हैं । अस्तित्ववाद इसी व्यक्तिगत पहचान की छटपटाहट का दर्शन है ।

मूल रूप से इसके इसकी जड़ें **सोरेनकीर्क गार्द के दर्शन में मिलती हैं** जिसकी कई मशहूर किताबों ने बहुत वैचारिक उद्वेलन पैदा किया , जिसमें बहुत ही महत्वपूर्ण किताब है **फीयर एंड ट्रंबलिंग** । लेकिन राजनीतिक दर्शन में अस्तित्ववाद के मुख्य प्रतिपादक या उन्नायक **ज्यां पाल सार्त्र** को माना जाता है ।सार्त्र के अलावा **मार्टिन हाइडेगर अल्बर्ट कैमस या कामू गैब्रियल यास्पर्स ,नीत्शे, राबर्ट निस्बत** आदि इसके अन्य प्रमुख विचारक है ।

सार्त्र का अस्तित्ववाद

ज्यांपाल सार्त्र एक फ्रेंच साहित्यकार है और दर्शन में उनका प्रवेश साहित्य के माध्यम से ही होता है। उनकी दो महत्वपूर्ण रचनाएं हैं।

1- नोसिया NAUSIA 1929

2- बीइंग एंड नथिंगनेस BEING AND NOTHINGNESS

सार्त्र ने अस्तित्ववाद को परिभाषित करते हुए कहा है की " **अस्तित्ववाद से हमारा अभिप्राय एक ऐसे सिद्धांत से है जो मानवीय जीवन को संभव बनाता है , और इस बात की घोषणा करता है कि प्रत्येक सत्य और प्रत्येक कार्य को मानवीय व्यक्तित्व के आधार पर समझा जाना चाहिए "**

बीइंग एंड नथिंगनेस मे वह मानवीय अस्तित्व के चार आधार बताता है

स्वतंत्रता
उत्तरदायित्व
परिस्थिति
संघर्ष ।

इसके लिए उसने चार दार्शनिक सिद्धान्तो का इस्तेमाल किया है।

1-बीइंग इन इट BEING IN ITSELF

2- बीईंग फार इटसेल्फ BEING FOR ITSELF .

3- बीईंग फार अदर सेल्फ BEING FOR OTHERSELF

4- बीइंग इन वर्ल्ड BEING IN WORLD

बीईंग इन इटसेल्फ BEINF IN ITSELF ;-

सार्त्र के अनुसार संसार में जो कुछ भी वस्तुएं हैं उन्हें समझा नहीं जा सकता क्योंकि वे सभी अपारदर्शी हैं। इसे समझने के सभी प्रयत्न बेकार होते हैं और हम उसे समझने के

प्रयास में अपने अस्तित्व का नाश कर लेते हैं । क्योंकि जब हम उन्हे समझ लेते हैं तो हमारे अंदर एक प्रकार की मूर्खता का भाव पैदा हो जाता है क्योंकि हम हमें उनकी अर्थात पदार्थ की नश्वरता स्पष्ट दिखाई देती है ।

बीईंग फार इटसेल्फ BEING FOR ITSELF :-

मनुष्य की क्षमता और लक्ष्यों में हमेशा एक अंतर बना रहता है उसकी क्षमता कार्य की एक संभावना पैदा करती है जो कभी भी प्राप्त नहीं होती जिसके कारण उसके अंदर असंतोष पैदा होता है और जिसे दूर करने के लिए वह फेथ या आस्था का सहारा लेता है जिस के कई रूप हो सकते हैं , और स्वयं को दूसरों में ढूंढना प्रारंभ करता है । फलतः उसमे असंतोष पैदा होता है ।

बीईंग फार अदरसेल्फ BEING FOR OTHER SELF :- सार्त्र के अनुसार असंतोष तब अधिक बढ़ता है जब मनुष्य स्वयं के अस्तित्व को दूसरों में या समूह में ढूंढना प्रारंभ करता है । तब उसकी सामूहिक पहचान उसकी आस्था के नाम पर उझसे स्वयं को समाहूहिक पहचान के समक्ष समर्पित करने की अपेक्षा रखती है । इससे संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है ।

बीईंगग इन वर्ल्ड BEING IN WORLD :- सार्त्र के अनुसार मनुष्य न केवल दूसरों को अपने जैसा बनाना चाहता है बल्कि पर्यावरण को भी अपने अनुकूल बनाना चाहता है । यह स्थिति एक चतुर्दिक संघर्ष को जन्म देती है । जब मनुष्य को इस सार्वभौमिक नश्वरता का एहसास होता है तब उसमें एक प्रकार का नोसिया का भाव उत्पन्न होता है जो इसके अतिवादी रूप में उसे आत्महत्या तक ले जाता है । आत्महत्या का विचार सार्त्र के दर्शन में उतना प्रबल नहीं है बाद में अल्बर्ट कामू ने इसे एक उपाय के रूप में सुझाया ।

अस्तित्ववाद की विशेषताएं

DR. SHAREEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

1- जनपुंज समाज का चित्रण - सभी अ सत्यवादी चिंतकों की रचनाओं में एक भीड़ भरे जन पुण्य समाज का चित्रण है I जिसमें व्यक्ति एक भीड़ का हिस्सा है जो अपने अस्तित्व की तलाश में है क्योंकि इस भीड़ में वह कहां जा रहा है उसके जीवन का उद्देश्य क्या है उसको कुछ नहीं पता , और यह भीड़ ही उसके अस्तित्व को संकट में डाले हुए हैं । इस प्रकार के समाज का चित्रण बहुत सामान्य है सभी अस्तित्ववादी विचारको की रचनाओं में यह मिलता है I जनपुंज समाज से अभिप्राय ऐसे समाज से है जहां प्रायः सामाजिक गतिविधि का आधार सामाजिक आर्थिक वर्ग होते हैं व्यक्ति नहीं I व्यक्ति अपने अस्तित्व के लिए एक सपोर्ट सिस्टम के सहारे रहता है और यह सपोर्ट सिस्टम अक्सर कोई ना कोई आर्थिक और सामाजिक कभी-कभी राजनीतिक वर्ग होते हैं I इन वर्गों की अपनी अपेक्षाएं होती हैं और व्यक्ति की समस्त ऊर्जा इन अपेक्षाओं को पूर्ण करने में खर्च होती जाती है, जो अस्तित्ववाद के चिंतन का मुख्य प्रश्न है I जिससे स्अस्तित्ववादी चिंतन मुखरित होता है I

2- उत्तर औद्योगिक समाज की देन- जनपुंज समाज उत्तर औद्योगिक व्यवस्था की देन है I औद्योगिकरण के अतिशय विकास ने बहुत बड़ी आबादी वाले बड़े शहरों को जन्म दिया जिनकी बड़ी विलक्षण किस्म की आवश्यकताएं होती हैं और जहां व्यक्ति के जीवन का स्तर कथित रूप से ऊंचा होता है I और इस कथित ऊंचे जीवन स्तर को बनाए रखने के लिए व्यक्ति को अपनी क्षमता से अधिक परिश्रम करना पड़ता है I जिसके कारण उसकी पूरी जिंदगी ही भाग दौड़ में भी जाती है I अतः उत्तर औद्योगिक समाज की विशेषताएं उसकी समस्याएं अस्तित्ववाद के चिंतन के जन्म के मूल कारणों में से एक है।

3- एकांकी व्यक्ति - भीड़ भरे जनपुंज समाज में व्यक्ति का स्वयं उसके अलावा कोई अपना नहीं है I इस प्रकार का अकेलापन अस्तित्व वादि दार्शनिकों की रचनाओं में बहुत सामान्य है I अगर यह कहा जाए कि अस्तित्ववाद का चिंतन अकेलेपन या एकाकी व्यक्ति का चिंतन है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी I इस एकाकी व्यक्ति के अस्तित्व की चिंता ही अस्तित्व आदि दर्शन का मूल विचार है I

4- अबुद्धिवाद - अस्तित्ववाद इस अर्थ में अबुद्धि वादी है कि क्योकि इसककी मान्यता है कि न तो पदार्थ को और ना ही अस्तित्व को बुद्धि से समझा जा सकता है । पदार्थ अनेक प्रकार की संज्ञाओं से बंधा हुआ है । इसलिए अपारदर्शी है इसी प्रकार मनुष्य के अस्तित्व की भी कोई बुद्धि वादी व्याख्या संभव नहीं है । उसको समझने का प्रयास ही उसमें नोशिया की भावना उत्पन्न करता है जो अंततः उसमें असंतोष पैदा करती है । अतः अस्तित्ववाद यद्यपि नीत्शे और शॉपन हावर के स्तर का अबुद्धिवाद नहीं है किंतु यह बुद्धि के आधार पर वस्तुओं को समझने की क्षमता पर संदेह करता है ।

5- स्वतंत्रता की अस्तित्ववादी व्याख्या -

हाइडेगर, सार्त् हिंदी सभी मानवीय स्वतंत्रता के मानवीय स्वतंत्रता के प्रबल पक्षधर हैं लेकिन उनकी स्वतंत्रता की अवधारणा सामान्य अवधारणा से अलग है वह स्वतंत्रता को कोई कानूनी विचार नहीं मानते हाइडेगर स्पष्ट रूप से यह कहता है कि स्वतंत्रता को जो प्रमाणित किया जाता है तब वह परतंत्रता बन जाती है इसलिए स्वतंत्रता राज्य और समाज का विषय नहीं है बल्कि स्वतंत्र होने का अर्थ अस्तित्व मान होने से है अतः स्वतंत्रता अस्तित्व मान होना है ।

6- विरोधी विचारों का संगम- अस्तित्व वादियों के विचारों में अस्तित्व की मूल विवेचना के बावजूद न केवल विश्लेषण में बल्कि अस्तित्ववाद के समाधान में भी काफी अंतर है । सार्त्र जहां आत्महत्या के प्रति बहुत आग्रही नहीं है, वहीं अल्बर्ट कामू इसे एक उपाय के रूप में बताता है । इसी प्रकार हाइडेकर की रचनाओं में मनोविज्ञानी पक्ष अधिक प्रमुख है । अतः अस्तित्ववाद परस्पर विरोधी विचारों का भी संगम है ।

7- अस्तितववादी व्यक्ति - मनुष्य के अस्तित्व का विचार और उसकी समस्याएं और उसका समाधान अस्तित्ववाध के चिंतन का केंद्र बिंदु है । इसके बावजूद मानवीय अस्तित्व की व्याख्या काफी जटिल और उलझी हुई दिखाई देती है अस्तित्ववादी चिंतकों

ने माननीय अस्तित्व की व्याख्या करने की बजाय उसके सामने आसन्न में संकटो की व्याख्या अधिक की है ।

मूल्यांकन

सार्त्र ने अस्तित्ववाद का बड़ा ही जटिल विवरण दिया है । समस्याओं का चित्रण सही होने के बावजूद उसका समाधान वह आत्महत्या के रूप में बताता है जो कि एक नकारात्मक विचार है । अस्तित्ववाद की परिणति सर्वाधिकारवाद में होती है जिससे कि फासीवाद और नाजीवाद जैसे सर्वाधिकार वादी दर्शन का पक्षपोषण होता हैं । अतः अस्तित्ववाद एक सार्वभौमिक दर्शन ना होकर उत्तर औद्योगिक समाज की समस्याओं से जुड़ा हुआ दर्शन है जो मूल रूप से मनुष्य के अस्तित्व के विचार को केंद्र में रखता तो है लेकिन उसे यूरोपीय समाज की जटिलताओं में गुम कर देता है । अस्तित्ववाद को सार्वभौमिक दर्शन बनने के लिए उसका निरपेक्ष होना आवश्यक है ।

गृह कार्य

1- अस्तित्ववाद मे ज्यां पाल सार्त्र के योगदान की समीक्षा कीजिए ।

2- सार्त्र के अस्तित्ववाद की व्याख्या कीजिए ।

संदर्भ

आन लाइन रिसोर्स

https://www.dictionary.com/browse/existentialism

https://en.m.wikipedia.org/wiki/Existentialism

https://en.m.wikipedia.org/wiki/Jean-Paul_ Sartre

Sartre.

Feed Back link
https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSdRpNmu6PZ-AMoLrMvODCDwa6-tG3nPDU_Lk-VyjnKKhmfErw/viewform